पुणा International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VII Subject-Hindi
Summative Assessment Assignment-2 (2021-22)

(अपठित-विभाग)

प्र-1 अपठित गदयांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

आज हम इस असमंजस में पड़े हैं और यह निश्चय नहीं कर पाए हैं कि हम किस ओर चलेंगे और हमारा ध्येय क्या है? स्वभावत ऐसी अवस्था :में हमारे पैर लड़खड़ाते हैं। हमारे विचार में भारत के लिए और सारे संसार के लिए सुख और शांति का एक ही रास्ता है और वह हैअहिंसा और आत्मवाद का। अपनी दुर्बलता के कारण हम- उसे ग्रहण न कर सके, पर उसके सिद्धांतों को तो हमें स्वीकार कर ही लेना चाहिए और उसके प्रवर्तन का इंतजार करना चाहिए। यदि हम सिद्धांत ही न मानेंगे तो उसके प्रवर्तन की आशा कैसे की जा सकती है। जहाँ तक मैंने महात्मा गांधी के सिद्धांत को समझा है, वह इसी आत्मवाद और अहिंसा के, जिसे वे सत्य भी कहा करते थे, मानने वाले और प्रवर्तक थे। उसे ही कुछ लोग आज गांधीवाद का नाम भी दे रहे हैं।यद्यपि महात्मा गांधी ने बार-बार यह कहा था-"वे किसी नए सिद्धांत या वाद के प्रवर्तक नहीं हैं और उन्होंने अपने जीवन में प्राचीन सिद्धांतों को अमल कर दिखाने का यत्न किया।" विचार कर देखा जाए, तो जितने सिद्धांत अन्य देशों, और स्थितियों में भिन्नभिन्न नामों और धर्मों से प्रचलित हुए हैं-,सभी अंतिम और मार्मिक अन्वेषण के बाद इसी तत्व अथवा सिद्धांत में समाविष्ट पाए जाते हैं। केवल भौतिकवाद इनसे अलग है।हमें असमंजस की स्थिति से बाहर निकलकर निश्चय कर लेना है कि हम अहिंसावाद, आत्मवाद और गांधीवाद के अनुयायी और समर्थक हैं, न कि भौतिकवाद के। प्रेय और श्रेय में से हमें श्रेय को चुनना है। श्रेय ही हितकर है, भले ही वह कठिन और श्रमसाध्य हो। इसके विपरीत, प्रेय आरंभ में भले ही आकर्षक दिखाई दे, उसका अंतिम परिणाम अहितकर होता है।

(कउपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (
(खआज का मनुष्य असमंजस में क्यों पड़ा है (?
(गलेखक के अनुसार (, विश्व में सुखसमृद्ध और शांति कैसे स्थापित हो सकती है-?
(घअहिंसा के बारे में लेखक का विचार स्पष्ट कीजिए। (
(डआज गांधीवाद की संज्ञा किसे दी जा रही है (?

उत्तर –

(क) शीर्षक-अहिंसा और आत्मवाद का सिद्धांत

(ख) आज का मनुष्य असमंजस में इसलिए पड़ा हुआ है, क्योंकि वह दिग्भ्रमित है और यह निश्चय नहीं कर पा रहा है कि उसका जीवन-लक्ष्य क्या है और वह किस ओर चले। ऐसी स्थिति में मनुष्य के कदम उसका साथ नहीं दे पाते और वह कोई फैसला नहीं कर पाता।

(ग) लेखक के अनुसार विश्व में सुख-शांति और समृद्ध के लिए आवश्यक है कि लोग हिंसा का रास्ता त्याग दें और मन-वचन तथा कर्म से अहिंसा का पालन करें और आत्मवाद का मार्ग अपनाकर औरों की सुख-शांति के लिए सोचें।

(घ) अहिंसा के बारे में लेखक का विचार है कि अपनी कमजोरी के कारण हम भारतीय अहिंसा को न अपना

सके, पर हमें अहिंसा के सिद्धांतों को स्वीकार कर लेना चाहिए और उसके प्रवर्तन का इंतजार करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि हम उसके सिद्धांत को मानें।

(ड) गांधी जी आत्मवाद और अहिंसा का पालन करते थे। इसी अहिंसा और आत्मवाद को वे मानते थे और उसका प्रवर्तन किया तथा इसे ही सत्य का नाम देते थे। उसी को आज गांधीवाद की संज्ञा दी जा रही है।

2) पतंग के जन्म के बारे में ठीकठीक जानकार-ी तो इतिहास में नहीं मिलती, पर कुछ ठोस जानकारी के हिसाब से करीब दो हजार वर्ष पूर्व चीन में किसी किसान ने मजाकमजाक में अपनी टोपी में डोरी बाँधकर हवा में उछाल-दिया था, और वह दुनिया की पहली पतंग बन गई| बाद में कुछ चीनी व्यापारियो से होते हुए यह विश्वभर में प्रचलित हो गई|आज भारत के गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर में होने वाले काईट उत्सव से हर कोई परिचित है|इस महोत्सव में भाग लेने के लिए हर वर्ष विश्व के कोने-कोने से प्रतियोगी भारत आते हैं|इन दिनों गुजरात की छठा ही निराली होती है|आसमान में उडती रंगर देतीं हैंबिरंगी पतंगें मानो जादू सा क-, हर कोई इस उत्सव में खिंचा चला आता है| पूरा आसमान विभिन्न आकारों की रंगबिरंगी पतंगों से भर जाता है-|दो हजार ग्यारह में देश की राजधानी दिल्ली के इंडिया गेट पर पतंगबाजी आईपीएल दो दिन हुआ था| पहले दिन देश के कोने-कोने से आये खिलाड़ी पेंच लड़ाते नजर आये दूसरा दिन आम लोगों के नाम हुआ. इस मुकाबले में महिलाओं को भी हुनर दिखने का मौक़ा मिला| वैसे तो भारत में बच्चे गर्मियों की छुट्टी में पतंग उड़ाते हैं किन्तु कई राज्यों में मकर-संक्रांति, छब्बीस-जनवरी एवं पंद्रह अगस्त को पतंग उड़ाई जाती हैं| ऊंचीं उड़ती पतंग खिलाड़ियों के मन में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित करती है तो नकारात्मकता स्वयं दूर हो जाती है|पतंगबाजी मानव को कल्पनाशील भी बनाती है|जिस प्रकार पतंग विपरीत हवा में आसमान में ऊँची उड़ती है, वैसे ही विपरीत परिस्थितियों में ही मनुष्य के धैर्य तथा साहस की परीक्षा होती है| पतंगबाजी से पूरे शरीर का व्यायाम भी हो जाता है|

प्रश्न 1- दुनिया की पहली पतंग के बारे में बताइए|
प्रश्न 2-काईट उत्सव कहाँ मनाया जाता है?
प्रश्न 3- भारत में पतंग कब-कब उड़ाई जाती है?
प्रश्न 4-आसमान में उड़ती पतंग हमें क्या सन्देश देती है?
प्रश्न 5- उपर्युक्त गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर

उत्तर 1- सही जानकारी तो नहीं है किन्तु दो हजार वर्ष पूर्व चीन में किसी किसान ने मजाक-मजाक में अपनी टोपी में डोरी बाँधकर हवा में उछाल दिया था, और वह दुनिया की पहली पतंग बन गई|
उत्तर 2-भारत के गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर में काईट उत्सव मनाया जाता है|
उत्तर 3- भारत में मकर-संक्रांति, छब्बीस-जनवरी एवं पंद्रह अगस्त को पतंग उड़ाई जाती है|
उत्तर 4- जिस प्रकार पतंग विपरीत हवा में आसमान में ऊँची उड़ती है, वैसे ही विपरीत परिस्थितियों में ही मनुष्य के धैर्य तथा साहस की परीक्षा होती है|
उत्तर 5- गद्यांश का एक शीर्षक – पतंग की कहानी

3) पुस्तकें सच्ची मित्र होती हैं|अब तक मैं यही समझता था. परंतु उस दिन मेरी यह धारणा भी टूट गई|मैंने एक ऐसी पुस्तक पढ़ी जिसमें घृणा और द्वेष भरा हुआ था| लेखक महोदय किसी विशेष विचारधारा से बंधे हुए जान पड़ते थे, जैसे जंजीरों में झगड़ा हुआ कैदी दांत पीस पीस कर हर अपने जाने वाले को गाली ही देता है उसी प्रकार लेखक महोदय को अपने समाज में सारे लोग शोषक जान पड़ते थे. लेखक को यदि कोई कार में सवारी करता सोचा, वह नफरत के योग्य लगा, जो मंदिर में जाता हुआ मिला वह मूर्ख लगा, जो संस्कारों की बातें करता, वह ढोंगी जान पड़ा. जो संस्कृति और मर्यादा की बात करता , वह शोषक प्रतीत हुआ. उसकी नजरों में सच्चा इंसान वही है जो

व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाए. चाहे व्यवस्था उसे सभी सुविधाएं दे रही हो फिर भी उसमें कमियां निकाले|अपने मालिक को, रोजगार देने वालों को अत्याचारी समझे. उसके विरुद्ध समय-समय पर संघर्ष की आवाज उठाता रहे, हड़ताल और तालाबंदी करता रहे, नारे लगाता रहे, झंडा उठाता रहे| ऐसा लगता है कि लेखक के जीवन का लक्ष्य भी मात्र यही था – निरंतर संघर्ष. सच कहूं तो ऐसी पुस्तक पढ़कर मैं शांत नहीं रह पाया| मेरे मन में खलबली मच गई और अशांति की प्राप्ति हुई|

1) अपठित गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए.
2)पुस्तकों के बारे में पाठक की धारणा क्यों टूट गई?
3)लेखक के जीवन का लक्ष्य क्या मालूम पड़ता था?
4)पुस्तक पढ़कर पाठक के मन पर क्या प्रभाव पड़ा?
5)लेखक की नजरों में सच्चा इंसान कौन है?

उत्तर –

1)अपठित गद्यांश का शीर्षक – मन की कुंठा
2) पुस्तकों के बारे में पाठक की धारणा इसलिए टूटी क्योंकि उसने घृणा, द्वेष और अशांति के विचारों से भरपूर पुस्तक का अध्ययन कर लिया था|
3)लेखक के जीवन का लक्ष्य था – निरंतर संघर्ष
4) पुस्तक पढ़कर लेखक का हृदय हलचल और अशांति से भर गया|
5) लेखक की नजरों में सच्चा इंसान है जो व्यवस्था के विरुद्ध लगातार लड़ता रहे|

➢ अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत-धन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।
मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान-पतन,
मैं अटका कब, कब विचलित में, सतत डगर मेरी संबल
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल
आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडन-मंडन।
मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

प्रश्न

(क) उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के स्वभाव की किन्हीं दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(ख) कविता में आए मेघ, विदयुत, सागर की गर्जना और ज्वालामुखी किनके प्रतीक हैं? कवि ने उनका संयोजन यहाँ क्यों किया है?
(ग) शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने कभी चयन-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
(घ) 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है? उसे कमजोर क्यों बताया गया है?

(ङ) किन पंक्तियों का आशय है कि तन मन में दृढनिश्चय का नशा हो तो जीवन मार्ग में बढ़ते रहने से कोई नहीं रोक सकता?

उत्तर-

(क) कवि के स्वभाव की निम्नलिखित दो विशेषताएँ हैं-

(ख) मेघ, विद्युत, सागर की गर्जना व ज्वालामुखी जीवनपथ में आई बाधाओं के परिचायक है। कवि इनका संयोजन इसलिए करता है ताकि अपनी संघर्षशीलता व साहस को दर्शा सके।

(ग) इसका अर्थ है कि कवि ने हमेशा चुनौतियों से पूर्ण कठिन मार्ग चुना है। वह सुख-सुविधा पूर्ण जीवन नहीं जीना चाहता।

(घ) इसका अर्थ है. समय की बाधाएँ। कवि कहता है कि संकल्पवान व्यक्ति बाधाओं व संकटों से घबराता नहीं है। वह उनसे मुकाबला कर उन पर विजय पा लेता है।

2) ये पंक्तियाँ हैं-

मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।
पाकर तुझसे सभी सुों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
बस तेरे ही सुरस सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तूही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।

प्रश्न

(क) यह काव्यांश किसे संबोधित है? उससे हम क्या पाते हैं?

(ख) प्रत्युपकार' किसे कहते हैं? देश का प्रत्युपकार क्यों नहीं हो सकता?

(ग) शरीर-निर्माण में मातृभूमि का क्या योगदान है?

(घ) अचल विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों?

(ङ) यह कैसे कह सकते हैं कि देश से हमारा संबंध मृत्यु पर्यन्त रहता है?

उत्तर-

(क) यह काव्यांश मातृभूमि को संबोधित है। मातृभूमि से हम जीवन के लिए आवश्यक सभी वस्तुएँ पाते हैं।

(ख) किसी से वस्तु प्राप्त करने के बदले में कुछ देना प्रत्युपकार कहलाता है। देश का प्रत्युपकार नहीं हो सकता, क्योंकि मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक हमेशा कुछ-न-कुछ इससे प्राप्त करता रहता है।

(ग) मातृभूमि से ही मनुष्य का शरीर बना है। जल, हवा, आग, भूमि व आकाश मातृभूमि में ही मिलते हैं।

(घ) अचल विशेषण मानव के मृत शरीर के लिए प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि मृत शरीर गतिहीन होता है तथा मातृभूमि ही इसे ग्रहण करती है।

(ङ) मनुष्य का जन्म देश में होता है। यहाँ के संसाधनों से वह बड़ा होता है तथा अंत में उसी में मिल जाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि देश से हमारा संबंध मृत्यु पर्यन्त रहता है।

(लेखन–विभाग)

➢ महात्मा गांधी पर अनुच्छेद

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात राज्य के काठियावाड़ प्रदेश में स्थित पोरबन्दर शहर में 2 अक्टूबर, 1869 ई॰ को हुआ था । उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान के । उनकी माता बड़ी सज्जन और धार्मिक विचारों वाली महिला थी । उन्होंने बचपन से ही गांधी को धार्मिक कथायें सुना-सुना कर उन्हें सात्विक प्रवृति बना दिया था ।सात वर्ष की आयु में उन्हे स्कूल भेजा गया । स्कूल की पढ़ाई में वे औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे । लेकिन वे अपना कक्षा मे ठीक समय पर नियमित रूप से पहुंचते थे और पाठ को मन लगाकर पढ़ते थे । मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद वै कॉलेज में पढ़े और बाद में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गये ।लन्दन में उनकी मुलाकात श्रीमती एनी बिरनेन्त से हुई और उनकी प्रेरणा से गांधी जी ने टाल्सटॉय के साहित्य को पढ़ा । टाल्सटॉय के विचारों ने उन्हें बड़ा प्रभावित किया । 1891 ई॰ में उन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त कर ली । उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने अहिंसा का मार्ग अपनाया और ब्रिटिश सरक के काले कानूनों का असहयोग आन्दोलनों के द्वारा जोरदार विरोध किया । उन्होंने रौलेट एक्ट तथा दूसरे काले कानूनों का डट कर विरोध किया इसके साथ ही उन्होंने काग्रेस पार्टी के सामने-समाज सुधार और हिन्दू-मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यो को सुझाया । छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतो को 'हरिजन' जैसा आदरणीय सबोधन दिया । ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया । कई बार उन्होने गाँधी जी तथा अन्य भारतीय नेताओं को पकड कर जेल में डाल दिया । लेकिन उन्होंने भारत को स्वतन्त्रता दिलवा दी । 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ । धी जी बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । वे सच्चाई का स्वयं पालन करते थे और सभी को सच्ची राह पर चलने की सलाह देते थे । वे बड़ा सादा जीवन बिताते थे । वे निर्धन, बेसहारों और बीमारों का बड़ा ख्याल रखते थे । उनका व्यक्तित्व अनोखा था । उन्होंने सदैव सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाया । उनकी हत्या 30 जनवरी, 1948 को हुई । वे आदर्श गुरु, श्रेष्ठ वक्ता महान् विचारक और कर्मठ व्यक्ति थे ।

➢ मकर संक्रांति

यह हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है जो सूर्य देव के राशि चक्र के मकर राशि में संक्रमण का स्वागत करने के लिए मनाया जाता है। 'मकर' का अर्थ मकर है और 'संक्रांति' का अर्थ संक्रमण है, इसलिए 'मकर संक्रांति' का अर्थ है सूर्य का राशि चक्र में मकर राशि में संक्रमण, जिसे हिंदू धर्म के अनुसार सबसे शुभ अवसरों में से एक माना जाता है और बहुत सारे उत्सव के साथ लोगों द्वारा स्वागत किया जाता है। और उत्सव। मकर संक्रांति, जिसे पतंग त्योहार भी कहा जाता है, एक लोकप्रिय हिंदू त्योहार है। इसे पंजाब में माघी के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में, त्योहार 'खिचीरी' के रूप में जाना जाता है गुजरात और राजस्थान में, त्योहार उत्तरयान के रूप में जाना जाता है।भारत की विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से परंपरा में भिन्नता के कारण, उत्सव प्रक्रिया और त्योहार के पीछे मिथक क्षेत्र से क्षेत्र में भिन्न होता है त्योहार सूर्य भगवान को समर्पित है|मकर संक्रांति से ही ऋतु में परिवर्तन होने लगता है। शरद ऋतु क्षीण होने लगती है और बसंत का आगमन शुरू हो जाता है। इसके फलस्वरूप दिन लंबे होने लगते हैं और रातें छोटी हो जाती है। बताया जाता है कि मकर संक्रांति के दिन ही भगवान विष्णु ने पृथ्वी लोक पर असुरों का संहार कर उनके सिरों को काटकर मंदरा पर्वत पर गाड़ दिया था। तभी से भगवान विष्णु की इस जीत को मकर संक्रांति पर्व के तौर पर मनाया जाने लगा। जाब, यूपी, बिहार समेत तमिलनाडु में यह वक्त नई फसल काटने का होता है, इसलिए किसान मकर संक्रांति को आभार दिवस के रूप में मनाते हैं। इस मौके पर गुजरात में पतंग उड़ाई जाती है साथ ही पतंग महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जो दुनियाभर में मशहूर है। उत्तरायण पर्व पर व्रत रखा जाता है और तिल व मूंगफली दाने की चक्की बनाई जाती है। मकर संक्रांति पर तिल और गुड़ से बने लड्डू और अन्य मीठे पकवान

बनाने की परंपरा है। मकर संक्रांति के मौके पर सूर्य देव के पुत्र शनि के घर पहुंचने पर तिल और गुड़ की बनी मिठाई बांटी जाती है। तिल और गुड़ की मिठाई के अलावा मकर संक्रांति के मौके पर पतंग उड़ाने की भी परंपरा है। गुजरात और मध्य प्रदेश समेत देश के कई राज्यों में मकर संक्रांति के दौरान पतंग महोत्सव का आयोजन किया जाता है।इस मौके पर बच्चों से लेकर बड़े तक पतंगबाजी करते हैं। पतंग बाजी के दौरान पूरा आसमान रंग-बिरंगी पतंगों से गुलजार हो जाता है।

➢ श्रम का महत्त्व

'श्रम' ही सफलता का मूल मंत्र है। निरंतर परिश्रम ही किसी व्यक्ति, जाति या देश के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता-व्यक्ति की कर्म भावना ही उसे महान अथवा क्षुद्र बना देती है। संसार अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ मनुष्य ने अपनी श्रमशीलता के बल पर सफलता के शिखर को छुआ है। लिंकन, गांधी, बोस आदि अनेक जाने अनजाने नाम निरंतर लगन से श्रम करके ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाए हैं।सच ही कहा गया है-'उद्यमेन ही सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः'-केवल इच्छा करने मात्र से कभी लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती। सब प्रकार से समर्थ होने पर भी अगर आप अकर्मण्य रहे, तो विजय-पताका कभी न फहरा पाएँगे।अतः यदि हम स्वयं को और अपने देश को ऊपर उठाना चाहते हैं तो पुरानी बातों को भूलकर हम श्रम के महत्त्व को समझें। इससे भारत देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने में हमें देर नहीं लगेगी।उद्यमी या परिश्रमी लोग जो चाहें कर सकते हैं। महान विजेता नेपोलियन अपनी सेना के साथ देश-देश जीतता हुआ बाढ़ के पानी की तरह बढ़ा आ रहा था। आल्पस पर्वत को देखकर सैनिक रुके, लेकिन जब नेपोलियन 'कहाँ है आल्पस? मुझे तो कहीं नजर नहीं आता' कहते आगे बढ़ा, तो सभी सैनिक उसके साथ हो लिए। परिश्रम का रास्ता फूलों का नहीं काँटों का रास्ता होता है। श्रम और दृढ़ निश्चय के बल पर ही व्यक्ति असफलताओं और पराजयों को पीछे ढकेल सफलता और विजय को खींचकर ला सकता है।

प्र-2 निम्नलिखित विषयो पर पत्र लिखिए।

1) अपने क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की समस्या के बारे में सूचना देते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

16 ए हौज खास, नई दिल्ली
दिनांक 25 जुलाई .....
सेवा में
थाना अध्यक्ष
विषय – बढ़ते हुए अपराधों की समस्या के समाधान हेतु पत्र।
मान्यवर

मैं हौज खास क्षेत्र में लगातार बढ़ रहे अपराधों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले दो महीने में हमारे क्षेत्र में चार चोरियाँ व दो हत्याएँ हो चुकी हैं। छोटी-मोटी राहजनी की घटनाएँ तो अब आम हो गई हैं। राह चलती महिलाओं के पर्स, चेन आदि मोटरसाइकिल सवार दिन-दहाड़े लूटकर ले जाते हैं। पुलिस की गश्त करने वाली वैन सड़क पर दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती। सिपाही गश्त पर नहीं आते। इस वजह से अपराधियों के हौंसले दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि इन अपराधों की रोकथाम के लिए जल्द से जल्द कार्यवाही करें, ताकि इस क्षेत्र के निवासी निश्चित होकर जी सकें और सड़कों पर चल सकें। आशा है कि आप मेरे अनुरोध पर ध्यान देंगे और कोई ठोस कदम उठाएँगे।

धन्यवाद
भवदीय
रजत कुमार

2)अपने पिताजी की बीमारी की सूचना अपने चाचा जी को पत्र द्वारा दीजिए

संजय नगर गाजियाबाद
20 अगस्त 2019
आदरणीय चाचा जी,
सादर प्रणाम

मैं कुशल पूर्वक हूँ और आपकी कुशलता ईश्वर से चाहता हूँ। मेरी पढ़ाई ठीक चल रही है। चाचा जी, चिंता और दुख की बात यह है कि आजकल पिताजी की तबीयत ठीक नहीं चल रही है। लगभग 10 दिन पहले उन्हें उच्च रक्तचाप के कारण सांस लेने में परेशानी होने लगी थी जिस कारण उन्हें 1 सप्ताह तक अस्पताल में भी रहना पड़ा था। अब वह घर आ गए हैं। राहत की बात यह है कि उनके स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार आ रहा है। डॉक्टर के अनुसार समय पर दवा लेने और थोड़ी सावधानी रखने पर वह शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगे।पिता जी आपको याद कर रहे हैं। शनिवार और रविवार आप का अवकाश होगा। आप 2 दिनों के लिए यहां आ जाइए। आपसे मिलकर उनका मन बहल जाएगा और हो सकता है उनका स्वास्थ्य जल्दी सुधार हो जाए। शेष सब कुशल है।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में
आपका भतीजा
सुरेश

3)प्रधानाचार्य को संध्याकालीन खेल की उचित व्यवस्था के लिए प्रार्थना करते हुए पत्र लिखिए

सेवा में
प्रधानाचार्य
दयानंद माध्यमिक विद्यालय
आगरा
महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में शाम को खेलने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। छात्रावास में भी कई छात्र रहते हैं जो कि प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सभी छात्र क्रिकेट हॉकी खो-खो बास्केटबॉल वॉलीबॉल आदि खेलों में भाग लेना चाहते हैं। कुछ छात्रों की अभिरुचि एथलेटिक्स में है जैसे कि लंबी दौड़, ऊंची दौड़, बाधा दौड़ इत्यादि।

आपसे निवेदन है कि संध्याकालीन खेलों की उचित व्यवस्था कराने का प्रबंध करें। यदि हमें कुशल प्रशिक्षक और खेलों के समुचित व्यवस्था मिल जाए तो मेरा विश्वास है कि हम विद्यालय का गौरव बढ़ा सकते हैं। कृपया इस ओर ध्यान दें।

धन्यवाद
निवेदक
सुजीत सरकार
कक्षा 11 एवं प्रतिनिधि, छात्रावास

➢ सूचना लेखन

(1) आप शांति विद्या निकेतन प्रशांत विहार दिल्ली की छात्रा खुशी मेहरा है विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश पत्र गुम हो गया है इस विषय पर 20 से 30 शब्दों में सूचना लिखिए।

शांति विद्या निकेतन प्रशांत विहार दिल्ली

सूचना

दिनांक :- 28/09/20....

परीक्षा प्रवेश पत्र गुम होना

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 27 सितंबर 20.... को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश पत्र गुम हो गया है। उस पर मेरी फोटो के साथ मेरा अनुक्रमांक नंबर 10678 है। यदि किसी को भी वह मिले तो मुझे लौट आने की कृपा करें।

खुशी मेहरा

कक्षा 7

(2) आप सर्वोदय कन्या विद्यालय दिल्ली की प्रधानाचार्य डॉ अंकिता शर्मा है विद्यालय में वन महोत्सव का आयोजन करने से संबंधित सूचना विद्यालय के सभी शिक्षकों और छात्राओं को 20 से 30 शब्दों में दीजिए।

सर्वोदय कन्या विद्यालय दिल्ली

सूचना

दिनांक :- 20 जून 20....

विद्यालय में वन महोत्सव का आयोजन

सभी शिक्षकों और छात्र छात्राओं को सूचित किया जाता है कि 27 जुलाई 2022 को दोपहर 12:30 बजे विद्यालय के परिसर में वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। आप सभी इस कार्यक्रम में अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाएं सभी छात्र-छात्राओं और शिक्षकों की उपस्थिति अनिवार्य है।

डॉक्टर अंकिता शर्मा

प्रधानाचार्य

(3) आप सेठ मोतीलाल इंटरनेशनल स्कूल झुंझुनू के स्वच्छता अभियान प्रभारी दिनेश शर्मा है विद्यालय में स्वच्छता अभियान पखवाड़े का आयोजन करने से संबंधित सूचना विद्यालय के सभी शिक्षकों और छात्राओं को 20 से 30 शब्दों में दीजिए।

सेठ मोतीलाल इंटरनेशनल स्कूल झुंझुनू

सूचना

दिनांक :- 25 अगस्त 20....

स्वच्छता अभियान के संदर्भ में

सभी छात्र छात्राओं को सूचित किया जाता है कि स्वच्छता अभियान पखवाड़े के अंतर्गत 5 सितंबर 2017 को स्कूल की ओर से अंबेडकर सर्किल झुंझुनू में स्वच्छता कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे से 2:00 बजे तक होगा इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम स्वच्छता अभियान के प्रभारी को 4 सितंबर 20... तक नोट करवा दें।

दिनेश शर्मा

स्वच्छता अभियान प्रभारी

➢ विज्ञापन तैयार कीजिए।

1) पानी बचाएँ पर एक विज्ञापन बनाएं।

2) दिवाली के अवसर पर दुकान में लगी सेल की जानकारी लोगों तक पहुंचाने हेतु एक विज्ञापन बनाएं।

3) पेंसिल बेचने के लिए एक विज्ञापन बनाएं।

(व्याकरण–विभाग)

➢ मुहावरे

1. कलई खुलना (रहस्य खुलना) – पुलिस ने जब सेठ धनीराम के व्यापार पर छापा मारा तो उसके कारोबार की कलई खुल गई।
2. कान भरना (चुगली करना) – मंथरा हमेशा कैकेयी के कान भरती रहती थी।
3. खून का प्यासा (जान लेने पर उतारू) – संपत्ति बँटवारे की समस्या ने दोनों भाइयों को एक-दूसरे के खून का प्यासा बना दिया।
4. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना) – गाँववालों को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।
5. कानाफूसी करना (धीरे-धीरे बात करना) – अध्यापिका जी के कक्षा से बाहर जाते ही बच्चों ने आपस में कानाफूसी शुरू कर दी।
6. चंपत होना (भाग जाना) – बिल्ली सारा दूध पीकर चंपत हो गई।
7. एड़ी-चोटी का जोर लगाना (पूरा जोर लगाना) – मैं कक्षा में प्रथम आने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा हूँ।
8. मुँह में पानी आना (लालच पैदा होना) – रसगुल्लों को देखकर मेरे मुँह में पानी भर आता है।
9. हवा से बातें करना (बहुत तेज़ दौड़ना) – बाबा भारती का घोड़ा हवा से बातें करता था।
10. अगर-मगर करना (टाल-मटोल करना) – माँ ने आयुष से पढ़ने के लिए कहा तो वह अगर-मगर करने लगा।
11. काम तमाम करना (मार डालना) – शेर ने कुछ ही पलों में हिरन का काम तमाम कर दिया।
12. बाट देखना (प्रतीक्षा करना) – हम सब मुख्य अतिथि की बाट देख रहे हैं।
13. दिल दुखाना (कष्ट देना) – हमें कभी भी अपनों का दिल नहीं दुखाना चाहिए।
14. बाल बाँका न होना (जरा भी नुकसान न होना) – इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद भी चालक का बाल भी बाँका न हुआ।
15. कान पकना (ऊब जाना) – पलक की बातें सुन-सुनकर मेरे कान पक गए हैं।

➢ लोकोक्तियाँ

1)अक्ल बड़ी या भैंस- काम बुद्धि से होता है, ताकत से नहीं
– एक पहलवान इस समस्या को हल नहीं कर सका, परंतु उस कमज़ोर व्यक्ति ने कितनी आसानी से हल कर दिया।
2)अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत - समय गुज़रने पर पछताना व्यर्थ है
– रेखा फेल होने पर बहुत पछताई कि यदि मेहनत कर लेती तो अवश्य पास हो जाती। पर अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत ।
3)अंधों में काना राजा- मूर्खा में थोड़ा ज्ञानी
– पूरे गाँव में मदन ही थोड़ा पढ़ा लिखा है, बस वही अंधों में काना राजा है।
4)आँख का अंधा नाम नयन सुख- अर्थ के विपरीत नाम
– उसका नाम तो है भोला लेकिन वह बड़े-बड़ों का कान काटता है। इसलिए कहा गया है – आँख का अंधा नाम नयन सुख।
5)उलटा चोर कोतवाल को डाँटे-स्वयं अपराध करके दूसरों पर दोष मढ़ना
– मेरी किताब गंदी करने पर राम मुझे ही डाँटने लगा। मैंने, कहा उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।
6)ऊँची दुकान फीका पकवान -ऊपरी दिखावा
– शो केस में रजत की दुकान में बड़े सुंदर सामान लगे हुए हैं, मगर अंदर सभी डुप्लीकेट माल भरा है। है न ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात।।
7)अंत भला तो सब भला -जिस काम का परिणाम अच्छा हो, वही ठीक है
– मेरी नौकरी तो छोटी-सी थी, अब तरक्की हो जाने पर सब ठीक हो गया, क्योंकि कहावत भी है कि अंत भला तो सब भला।।
8)साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे - आसानी से काम हो जाना
– ठेके और जमींदार के झगड़े में पंच को ऐसा फैसला सुनाना चाहिए कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

➢ निम्नलिखित वाच्य के नाम लिखिए|

1) वह खाना खाकर चला गया।- कर्तृवाच्य
2)मोहन से चला नहीं जाता।- भाववाच्य
3)आज निश्चित होकर सोया जाएगा। - भाववाच्य
4)ड्राईवर बस चलाता जा रहा था।- कर्तृवाच्य
5)उससे पत्र नहीं पढ़ा जाता।- कर्मवाच्य
6)रुक्मिणी से यह सामान नहीं उठाया जाता।- कर्मवाच्य
7)छात्राएँ रात-रात भर पढ़ाई करती रही।- कर्तृवाच्य
8)वह रामलीला देख रहा है।- कर्तृवाच्य
9)तन्वी रात भर सो न सकी।- भाववाच्य
10)अक्षर से एक भी गेंद नहीं फेंकी गई।- कर्मवाच्य

निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलिए|

1)दीप्ति द्वारा नहीं लिखा जाता।
2)शोभना से पढ़ा नहीं जाता।
3)श्रद्धालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है।
4)समर्थकों द्वारा पुष्प वर्षा की गई।
5)आपके द्वारा उनके विषय में क्या सोचा जाता है।
6)उनके द्वारा कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया गया।
7)चलिए, अब सोया जाए।

उत्तरः

1)दीप्ति नहीं लिखती है।
2)शोभना नहीं पढ़ती है।
3)श्रद्धालु काशीवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।
4)समर्थकों ने पुष्पवर्षा की।
5)आप उनके विषय में क्या सोचते हैं।
6)उन्होंने कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया।
7)चलो,अब सोते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए|

1)उन्होंने दोनों भाइयों को पढ़ाया।
2)रामपाल ने बड़े दुखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया।
3)उसने भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर दिया।
4)आओ, कुछ बातें करें।
5)हमने उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया। (Delhi 2014)
6)मंत्री जी ने राहत सामग्री बँटवाई। (All India 2014)
7)अनेक श्रोताओं ने कविता की प्रशंसा की। (Delhi 2015)
8)बहन ने भाई को प्रेमपूर्वक राखी बाँधी। (Foreign 2015)

उत्तरः

1)उनके द्वारा दोनों भाईयों को पढ़ाया गया।
2)रामपाल द्वारा अत्यंत दुखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया गया।
3)उसके द्वारा भगत को दुनियादारी से मुक्त कर दिया गया।
4)आइए, कुछ बातें की जाएँ।
5)हमारे द्वारा उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया गया।
6)मंत्री जी द्वारा राहत सामग्री बँटवाई गई।
7)अनेक श्रोताओं द्वारा कविता की प्रशंसा की गई।
8)बहन द्वारा भाई को प्रेमपूर्वक राखी बाँधी गई।

➢ सन्धि – विच्छेद

1)दिवसावसान – दिवस + अवसान
2) ग्रामांचल – ग्रामा + अंचल
3) दीपावली – दीप +अवली
4) भानूदय – भानु + उदय
5) मधूत्सव – मधु + उत्सव
6) क्षितीन्द्र – क्षिति + इन्द्र
7) अधीश्वर – अधि + ईश्वर
8) सुधीन्द्र – सुधी + इन्द्र
9)प्रियैषी – प्रिय + एषी
10)पुत्रैषणा – पुत्र + एषणा
11) धनैषी – धन + एषी
12) महौदार्य – महा + औदार्य
13)सूर्योष्मा – सूर्य + उष्मा
14)महोत्सव – महा + उत्सव
15)महर्षि – महा + ऋषि
16) सप्तर्षि – सप्त + ऋषि
17) रीत्यनुसार – रीति + अनुसार
18) सदात्मा – सत् + आत्मा
19)निश्चल – निः + चल
20) निश्चय – नि: + चय

➢ वाक्य के प्रकार लिखिए।

1) वह अब जा चुका होगा। सन्देहवाचक वाक्य
2) अरे! वह उत्तीर्ण हो गया। विस्मयवाचक वाक्य
3) जो परिश्रम करेगा वह सफल होगा। संकेतवाचक वाक्य
4) राम नहीं पढ़ता है। निषेधवाचक वाक्य
5) यहीं बैठकर पढ़ो| आज्ञावाचक वाक्य
6) आप जीवन में उन्नति करें। इच्छावाचक वाक्य
7) आपका भविष्य उज्ज्वल हो | इच्छावाचक वाक्य
8) लड़कियाँ नृत्य कर रहीं है।
9) आपकी यात्रा शुभ हो। इच्छावाचक वाक्य
10) ओह ! कितना सुन्दर दृश्य है। विस्मयादिवाचक वाक्य
11) क्या आप आगरा जा रहीं हैं ? प्रश्नवाचक वाक्य
12) आप बजार ना जायें। निषेधवाचक वाक्य
13) क्या आप खाना खाओगे? प्रश्नवाचक वाक्य
14) आपका जीवन मंगलमय हो। इच्छावाचक वाक्य
15) सूर्य पूर्व में उदय होता है। विधानवाचक वाक्य
16) शायद मैं फिल्म देखने चला जाऊँ। संदेहवाचक वाक्य

➢ चिह्न

1) पूर्ण विराम-चिह्न (Sign of full-stop) – (l)
2) अर्द्ध विराम-चिह्न (Sign of semi-colon) – (;)
3) अल्प विराम-चिह्न (Sign of comma) – (,)
4) प्रश्नवाचक चिह्न (Sign of interrogation) – (?)
5) विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of exclamation) – (!)
6) उद्धरण चिह्न (Sign of inverted commas) – (" ") (' ')
7) निर्देशक या रेखिका चिह्न (Sign of dash) – (—)
8) विवरण चिह्न (Sign of colon dash) – (:-)
9) अपूर्ण विराम-चिह्न (Sign of colon) – (:)

10) योजक विराम-चिह्न (Sign of hyphen) – (-)
11) कोष्ठक (Brackets) – () [] {}

(साहित्य-विभाग)

➢ सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1- रामन मल्लिका किसकी हँसी उड़ा रहे थे?
(a) जॉर्ज की (b) अप्पू की
(c) कंचों की (d) उपर्युक्त सभी

2- अप्पू के विद्यालय के रास्ते में किसके पेड़ों की घनी छाँव थी?
(a) पीपल के (b) नीम के
(c) आम के (d) शीशम के

3- अप्पू का ध्यान किसकी कहानी पर केंद्रित था?
(a) सियार और कौआ की (b) लोमड़ी और कौए की
(c) लोमड़ी और सारस की (d) सियार और ऊँट की

4- शुरुआत में शावकों ने दिन कैसे व्यतीत किया?
(a) मेज़ पर चढ़कर (b) कुरसी पर चढ़कर
(c) कहीं छिपकर (d) लेखिका के पास रहकर।

5- बड़े मियाँ के भाषण की तुलना किससे की गई है?
(a) ड्राइवर से (b) चिड़ीमार से
(c) सामान्य ट्रेन से (d) तूफ़ान मेल से।

6- मोर के दोनों बच्चों को चिड़ीमार कहाँ से पकड़कर लाया था?
(a) रामगढ़ से (b) रायगढ़ से
(c) पिथौरागढ़ से (d) शंकरगढ़ से।।

7- मंगल पांडे ने अंग्रेजों के विरुद्ध कहाँ बगावत किया था?
(a) दानापुर (b) कानपुर
(c) आज़मगढ़ (d) बैरकपुर

8- पाठ में किस स्थान पर 1857 में भीषण विद्रोह नहीं हुआ था।
(a) कानपुर (b) बुंदेलखंड
(c) आजमगढ़ (d) रूहेलखंड

9- 11 मई 1857 को भारतीय सैनिकों ने किस पर कब्जा कर लिया?
(a) लखनऊ (b) आरा
(c) मेरठ (d) दिल्ली

10- वीर कुंवर सिंह का जन्म किस राज्य में हुआ था?
(a) बंगाल (b) उत्तर प्रदेश
(c) बिहार (d) उड़ीसा।

11- कुछ समय बाद आगंतुकों की संख्या आश्रम में किंतने होने वाली थी?
(a) 30 (b) 40
(c) 50 (d) 60

12- सपरिवार रहने वाले अतिथि की संख्या आश्रम में कितनी होगी?

(a) 2 (b) 3

(c) 5 (d) 3 से 5

13- आश्रम में कितनी पुस्तकें रखने की बात हो रही थी?

(a) 1000 (b) 1500

(c) 2000 (d) 3000

14- 'भोर और बरखा' कविता की रचयिता हैं?

(a) सुभद्रा कुमारी चौहान (b) मीरा बाई

(c) महादेवी वर्मा (d) विनीता पाण्डेय।

15- रहीम के दोहे' का मुख्य अभिप्राय है?

(a) ईश्वर की भक्ति (b) नीति की बातें

(c) वीरता का वर्णन (d) ईमानदारी की बातें

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1-जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?

उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़ जाती है।

2-"जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता"इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर-जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।

3- सज्जन और विद्वान के संपत्ति संचय का क्या उद्देश्य होता है?

उत्तर-सज्जन और विद्वान संपत्ति का अर्जन दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। उनका धन हमेशा दूसरों की भलाई में खर्च होता है।

4- रहीम ने क्वार मास के बादलों को कैसा बताया है?

उत्तर- रहीम ने क्वार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजने वाला बताया है।

5- अप्पू को कंचे का आकार कैसा लग रहा था?

उत्तर – अप्पू को कंचे का आकार आँवले जैसा लग रहा था।

6- अप्पू को उसके पिता ने पैसे क्यों दिए थे?

उत्तर - अप्पू को उसके पिता ने पैसे स्कूल की फ़ीस के लिए दिए थे।

7- कंचे कैसे थे?

उत्तर - सफ़ेद गोल कंचे थे। उसमें हरी लकीरें थी। वह बड़े आँवले के जैसे थे और बहुत खूबसूरत थे।

8- तिनका कहाँ आ गिरा?

उत्तर - तिनका कवि की आँख में आ गिरा।

9- कवि घमंड में ऐंठा हुआ कहाँ खड़ा था?

उत्तर - कवि घमंड में ऐंठा हुआ मुंडेर पर खड़ा था।

10- कवि पर किसने व्यंग किया?

उत्तर – कवि पर समझ ने व्यंग किया।

11- मोरनी को मोर की सहचारिणी क्यों कहा गया?

उत्तर-मोरनी को मोर का सहचारिणी कहा गया क्योंकि वह हमेशा मोर के साथ रहती थी।

12- घर पहुँचने पर बच्चों को घरवालों ने क्या कहा?

उत्तर-घर पहुँचने पर सब कहने लगे – तीतर है और मोर कहकर ठग लिया है।

13- वीरकुंवर सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर- वीरकुंवर सिंह का जन्म 1782 ई० में बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में हुआ था।

14- बाबूकुँवर सिंह ने रियासत की जिम्मेदारी कब सँभाली?

उत्तर- बाबूकुँवरसिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद 1827 में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।

15- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत कब और किसने की?

उत्तर- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत मंगलपांडे ने मार्च 1857 में बैरक पुर सैनिक छावनी से की थी।

16- गांधीजी कौन-सा आश्रम बना रहे थे?

उत्तर- गांधीजी अहमदाबाद में साबरमती आश्रम बना रहे थे।

17- शिक्षण के सामान में कितने हथकरघों की आवश्यकता होगी?

उत्तर- पाँच-छह देशी हथकरघों की आवश्यकता होगी।

18- गांधीजीने आश्रम की स्थापना कब की थी?

उत्तर- गांधीजीने आश्रम की स्थापना दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद की थी।

19- कवि अन्य कवियों से क्या आह्वान करता है?

उत्तर- क्रांतिकारी गीत की रचना के लिए आह्वान करता है।

20- क्रांति लाने के लिए कवि किसका सहारा लेता है?

उत्तर- क्रांति लाने के लिए कवि गीत का सहारा लेता है।

21- कवि के कंठ से निकले गीत का क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर- कवि के कंठ से निकले गीत जीर्ण-शीर्ण विचारधाराओं और रुढ़िवादी विचारों का नाश हो जाएगा।

➢ लघु उत्तरीय प्रश्न

1-रहीम मनुष्य को धरती से क्या सीख देना चाहता है?

उत्तर-रहीम मनुष्य को धरती से सीख देना चाहता है कि जैसे धरती सरदी, गरमी व बरसात सभी ऋतुओं को समान रूप से सहती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने जीवन में सुख-दुख को सहने की क्षमता होनी चाहिए।

2- वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं?

उत्तर- वृक्ष और सरोवर अपने द्वारा संचित वस्तु का स्वयं उपयोग नहीं करते हैं, यानी वृक्ष असंख्य फल उत्पन्न करता है लेकिन वह स्वयं उसका उपयोग नहीं करता। वह फल दूसरों के लिए देते हैं। ठीक इसी प्रकार सरोवर भी अपना जल स्वयं न पीकर उसे समाज की भलाई के लिए संचित करता है।

3- मीरा ने सावन का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- कविता के दूसरे पद में मीरा ने सावन का वर्णन अनुपम ढंग से किया है। वे कहती हैं कि सावन के महीने में मन-भावन वर्षा हो रही है। सावन के आते ही मन में उमंग आ जाती है। उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है। चारों ओर से बादल उमड़-घुमड़ कर आ रहे हैं, बिजली चमक रही है, नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही हैं तथा मंद-मंद शीतल वायु चल रही है।

4- दुकान में कंचे देखकर अप्पू की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर – वह कंधे से लटकते बस्ते का फीता एक तरफ़ हटाकर, उस कंचे वाले जार के सामने खड़ा होकर टुकर – टुकर ताकता रहा और सोचने लगा की शायद दुकानदार ने इसे नया - नया लाकर कर रखा है।

5- तिनकेवाली घटना से कवि को क्या शिक्षा मिली?

उत्तर

तिनकेवाली घटना से कवि को यह शिक्षा मिली कि मनुष्य को कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। एक छोटा तिनका भी कष्ट का कारण बन सकता है और हमारे घमंड को चूर कर सकता है।

8- कवि की सारी अकड़ क्यों भाग गई?

उत्तर – कवि की सारी अकड़ आँख में तिनका गिरने से भाग गई। उसे घमंड था कि उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता परन्तु एक तिनके ने उसकी हालत बुरी कर दी और उसे तिनका निकालने के लिए दूसरों की मदद लेनी पड़ी।

9- नीलकंठ का सुखमय जीवन करुण कथा में कैसे बदल गया?

उत्तर-कुब्जा के आने के बाद उसने अपने रूखे व्यवहार की शुरुआत कर दिया। उसके कलह से नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया। कई बार वह जालीघर से निकल भागा। एक दिन वह भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से लेखिका ने पुचकार कर उतारा। एक बार खिड़की की शेड पर छिपा रही। तीन-चार महीने के बाद नीलकंठ ने अपने प्राण त्याग दिए। उसके सुखमय जीवन का अंत हो गया।

10- कुब्जा और नीलकंठ के स्वभाव में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कुब्जा के स्वभाव में रूखापन था। वह किसी को भी नीलकंठ के पास नहीं आने देना चाहती थी। यहाँ तक कि उसने राधा को भी उससे अलग कर दिया। इसके विपरीत नीलकंठ का स्वभाव सरल था उसका सभी के साथ मेल-जोल था। वह सभी जीव-जंतुओं में अपनी एक विशेष पहचान रखता था। राधा के साथ उसका आत्मीय संबंध था, जब कुब्जा ने राधा से दूर किया तो उसने अपने प्राण ही त्याग दिए।

11- आज़मगढ़ की ओर जाने का वीरकुंवर सिंह का क्या उद्देश्य था?

उत्तर- वीरकुंवर सिंह का आजमगढ़ जाने का उद्देश्य था, इलाहाबाद तथा बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना।उस पर अपना अधिकार जमाना। अंततः उन्होंने इन पर अधिकार करने के बाद जगदीश पर भी कब्जा जमा लिया।उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आजमगढ़ पर भी अधिकार कर लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बारहराया। वे 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय-पताका फहराते हुए जगदीशपुर तक पहुंच गए।

12- 1857 की क्रांति की क्या उपलब्धियाँ थीं?

उत्तर- 1857 की क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि यह आंदोलन देश को आजादी पाने की दिशा में एकप्रथम चरण था। इस क्रांति के परिणाम स्वरूप लोगों की आँखें खुल गईं और उनमें राष्ट्रीयएकता और स्वाधीनता की पृष्ठ भूमिका विकास हुआ। इस आंदोलन की उपलब्धि सांप्रदायिक सौहार्द की भावना के विकास के रूप में हुआ। हिंदू- मुस्लिमएकताबढ़ी। राष्ट्रीयभावनालोगोंमेंजाग्रतहुई।

13- गांधीजी को आश्रमके लिए कितने स्थान की ज़रूरत थी और क्यों?

उत्तर- साबरमती आश्रम में लगभग 40-50 लोगों के रहने, इनमें हर महीने दस अतिथियों के आने की संभावना, जिनमें तीन या पाँच सपरिवार आने की उम्मीद थी। अतः आश्रम में तीन रसोईघर तथा रहने के मकान के लिए 50,000 फुट क्षेत्रफल में बने मकान की आवश्यकता थी। इसके अलावे-खेती के लिए पाँच एकड़ जमीन की ज़रूरत थी, क्योंकि इतने लोगों के भोजन का सामान खरीदना कठिन था।

14- कवि विप्लव गान क्यों गाना चाहता है?

उत्तर- कवि का मानना है कि विप्लव गान द्वारा ही वह लोगों को समाज के नवनिर्माण के लिए जाग्रत कर सकता है, क्योंकि सुंदर राष्ट्र की नींव पुराने, गले-सड़े रीति-रिवाजों व रूढ़िवादी विचारों पर नहीं रखा जा सकता।

➢ दीर्घ प्रश्नो के उत्तर लिखिए ।

1-1857 के आंदोलन में वीर कुंवरसिंह के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- वीरकुंवरसिंह का 1857 के आंदोलन में निम्नलिखित योगदान है कुँवरसिंह वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुंवरसिंहकी वीरता पूरे भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई।इसके अलावे इन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊआदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। उन्होंने विद्रोह का सफल नेतृत्व करते हुए दानापुरऔरआरा पर विजय प्राप्तकी।जगदीशपुर में पराजित होने के बावजूद सासाराम से मिर्जापुर, रीवा, कालपी होते हुए कानपुर पहुँचे। उनकी वीरता की ख्याति दूर दूर स्थान में पहुँच गई। उन्होंने आज़मगढ़ पर अधिकार करने के बाद अपनी मातृभूमि जगदीशपुर पर पुनः आधिपत्य जमा लिया। इसप्रकार उन्होंने मरते दमतक अपनी अमिट छाप पूरे देश पर छोड़ा।

2- नीलकंठ चिड़ियाघर के अन्य जीव-जंतुओं का मित्र भी था और संरक्षक भी। वह कैसे?

उत्तर-लेखिका कहती है कि उन्हें पता नहीं चला कि अपने स्वभाव और संस्कारवश मोर ने स्वयं को अन्य सभी जीवों का रक्षक और सेनापति कब नियुक्त कर लिया। वह सबको लेकर उस स्थान पर पहुँच जाता जहाँ दाना बिखेरा जाता। वह घूम-घूमकर रखवाली करता और अगर किसी ने गड़बड़ की तो उसे दंडित भी करता था। वह उन सब का मित्र तो था ही। एक बार साँप ने खरगोश के बच्चे का आधा हिस्सा अपने मुँह में दबा लिया। वह चीख नहीं सकता था। नीलकंठ ने उसका धीमा स्वर सुन लिया और उसने नीचे उतरकर साँप को फन के पास पंजों से दबाया और चोंच-चोंच मारकर उसे अधमरा कर दिया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश उसके मुँह से निकल आया। मोर रात भर उसे अपने पंखों के नीचे रखकर गरमी देता रहता।

3- कहानी में अप्पूने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?

उत्तर- जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससेवहहारजाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंदमुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंदमुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है।अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा।अप्पू की इस सोचके पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पडेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

4- कवि के अनुसार जीवन का रहस्य क्या है?

उत्तर-कवि के अनुसार, कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है। इस कविता का भाव है जीवन का रहस्य है। विकास और गतिशीलता में रुकावट पैदा करने वाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके नया निर्माण करना। नव-निर्माण के लिए कवि विध्वंस और महानाश को आवश्यक मानता है। यह विनाश सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी मानसिकता, जड़ता तथा अंधविश्वास को काटकर दूर फेंक देगा। सारी रुकावट समाप्त कर नए सृजन तथा नए राष्ट्र को निर्माण का रास्ता साफ़ हो जाएगा। इसके लिए कवि द्वारा एक क्रांति की चिंगारी जलाने की जरूरत है।

5 - गांधीजीने आश्रम के अनुमानित खर्च का ब्यौरा क्यों तैयार किया?

उत्तर-गांधीजी द्वारा लिखे गए पाठ 'आश्रम का अनुमानित व्यय' से हमें सीख मिलती है कि यदि हम कोई भी कार्य करना चाहें तो सोच-समझकर पहले ब्यौरा बना लेना चाहिए ताकि उसके अनुमानित खर्च को भी जाना जा सकता था इस हिसाब से आगे बढ़ने का रास्ता भी साफ़ दिखाई देने लगता है। गांधीजी एक ऐसे आश्रम की स्थापना कर रहे थे। इसके लिए स्थान की ज़रूरत थी, आवश्यकवस्तुओं, पुस्तकों, भोजन की व्यवस्था करने की जरूरत थी। वहाँ सत्याग्रह तथा स्वदेशी आंदोलन की योजनाएँ तैयार करनी थीं। वह आश्रम एक दो दिन के लिए नहीं, लंबे समय के लिए बनाया जा रहा था। अतःस्थायी व्यवस्था के लिए गांधीने खर्च का लेखा-जोखा तैयार दिया।

6- गांधीजी के अनुसार आश्रम में कौन-कौन से खर्च थे? वह उसे कहाँ से जुटाना चाहते थे?

उत्तर- गांधीजी के अनुसार यदि अन्यखर्च अहमदाबाद उठाले, तो वह खाने का खर्च जुटा लेंगे। उनके अनुसार आश्रम में निम्नलिखित खर्च थे।

मकान और जमीन का किराया।
किताबों की अलमारियों का खर्च ।
बढ़ई के औजार।।
मोची के औजार।
चौके के सामान।
एक बैलगाड़ी या घोडागाड़ी।
एक वर्ष में भोजन का खर्च- 6000 रु०।।

बाल- महाभारत

1-दुर्योधन और अर्जुन किस कारण श्रीकृष्ण के पास गए थे?

उत्तर - दुर्योधन और अर्जुन दोनों ही श्रीकृष्ण के पास उनसे प्रार्थना करने गए थे कि वो उनकी युद्ध में सहायता करें।

2- श्रीकृष्ण से मिलने के बाद दुर्योधन किस बात के लिए आनंदित हो रहा था?

उत्तरश्रीकृष्ण से मिलने के बाद दुर्योधन आनंदित हो रहा था क्योंकि उसे लगा कि अर्जुन ने खूब धोखा खाया और श्रीकृष्ण की वह लाखों वीरोंवाली भारी-भरकम सेना सहज में ही उसके हाथ आ गई।

3- श्रीकृष्ण किन लोगों को लेकर उपप्लव्य जा पहुँचे?

उत्तर – भाई बलराम, अर्जुन की पत्नी सुभद्रा तथा पुत्र अभिमन्यु और यदुवंश के कई वीरों को लेकर श्रीकृष्ण उपप्लव्य जा पहुँचे।

4 धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को संधि के विषय में क्या समझाया?

उत्तर- धृतराष्ट्र ने संतप्त होकर दुर्योधन को समझाया-"बेटा, भीष्म पितामह जो कहते हैं, वही करने योग्य है। युद्ध न होने दो। संधि करना ही उचित है।"

5- संधि प्रस्ताव के विषय में अंत में धृतराष्ट्र ने क्या निश्चय किया?

उत्तर- सारे संसार की भलाई को ध्यान में रखकर धृतराष्ट्र ने अपनी तरफ़ से संजय को दूत बनाकर पांडवों के पास भेजने का निश्चय किया।

6- श्रीकृष्ण हस्तिनापुर किस उद्देश्य से गए?

उत्तर - शांति की बातचीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए।

7- कर्ण की बातें सुनकर कुंती की क्या दशा हुई?

उत्तर – कर्ण की सारी बातें सुनकर माता कुंती का मन बहुत विचलित हुआ, परंतु उन्होंने उसे अपने गले से लगा लिया और आशीर्वाद देकर कुंती अपने महल में चली आई।

8- महाभारत का युद्ध कुल कितने दिन तक चला?

उत्तर- महाभारत का युद्ध कुल अट्ठारह दिन तक चला।

9- कौरवों की सेना के नायक कौन थे?

उत्तर - कौरवों की सेना के नायक भीष्म पितामह थे ।

10- किसे पांडवों की सेना का नायक बनाया गया?

उत्तर – वीर कुमार धृष्टद्युम्न को पांडवों की सेना का नायक बनाया गया।

11- कर्ण की मृत्यु कब हुई?

उत्तर – सत्रहवें दिन की लड़ाई में कर्ण की मृत्यु हो गई।

12- पहले दिन की लड़ाई में हुई दुर्गति से पांडवों ने क्या सबक लिया?

उत्तर- पहले दिन की लड़ाई में पांडव-सेना की जो दुर्गति हुई थी, उससे सबक लेकर पांडव सेना के नायक धृष्टद्युम्न ने दूसरे दिन बड़ी सतर्कता के साथ व्यूह-रचना की और सैनिकों का साहस बँधाया।

13-द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह किसने तोड़ा?

उत्तर – द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह अभिमन्यु ने तोड़ा।

14- दुर्योधन के पुत्र लक्ष्मण की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर – अभिमन्यु की बाण-वर्षा से व्याकुल होकर जब सभी योद्धा पीछे हटने लगे, तो वीर लक्ष्मण अकेला जाकर अभिमन्यु से भिड़ गया। वह वीर बालक भाले की चोट से तत्काल मृत होकर गिर पड़ा।

15- शकुनि का वध किसने किया?

उत्तर – शकुनि का वध सहदेव ने किया।

16- परीक्षित किसका पुत्र था?

उत्तर – परीक्षित उत्तरा और अभिमन्यु का पुत्र था।

17-अश्वथामा कौन था और उसने पांडवों को नष्ट करने की प्रतिज्ञा क्यों ली?

उत्तर – अश्वथामा द्रोणाचार्य का पुत्र था। उसने पांडवों को नष्ट करने की प्रतिज्ञा इसलिए ली थी क्योंकि पांडवों ने कुचक्र रच कर उसके पिता द्रोणाचार्य का वध किया था।

18- बलराम ने समाधि में बैठकर शरीर क्यों त्याग दिया?

उत्तर – वंश-नाश देखकर बलराम को असीम शोक हुआ और उन्होंने वहीं समाधि में बैठकर शरीर त्याग दिया।

19- श्रीकृष्ण की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर-

जो कुछ हुआ था, उस पर विचार करके श्रीकृष्ण ने जान लिया कि संसार छोड़कर जाने का उनका भी समय आ गया है। यह सोचतेसोचते वह भी वहीं जमीन पर एक पेड़ के नीचे लेट गए। इतने में कोई शिकारी शिकार की तलाश में घूमता फिरता उधर से आ निकला। सोए हुए श्रीकृष्ण को शिकारी ने दूर से हिरन समझा और धनुष तानकर एक तीर मारा। तीर श्रीकृष्ण के तलुए को छेदता हुआ शरीर में घुस गया और उनके देहावसान का कारण बन गया।